वैश्विक साहित्य में स्त्री चेतना

संपादक
डॉ. संध्या गर्ग

साहित्य संचय
ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन
हम करते हैं समय से संवाद

Principal
Govt. Ripudaman College
NABHA

Scanned with OKEN Scanner

© डॉ. संध्या गर्ग

ISBN : 978-93-88011-48-8

प्रकाशक
साहित्य संचय
बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस
ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस
राम निकुंज, पुतलीसड़क
काठमांडौ, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2019
कवर डिजाइन : प्रदीप कुमार

मूल्य : ₹ 250 (भारत, नेपाल)
मूल्य : $ (अन्य देश)

VAISVIK SAHITYA MEIN STRI-CHETNA
EDITED by Dr. Sandhya Garg

साहित्य संचय, बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-110090 से मनोज कुमार द्वारा प्रकाशित तथा श्रीबालाजी ऑफसेट, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Principal
Govt. Ripudaman College
NABHA

Scanned with OKEN Scanner

वर्तमान समय में पुरुष वर्चस्व के विरोध में उग्र होता स्त्री स्वर

डॉ. तलविंदर सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर,
दीवान कृष्ण किशोर सनातन धर्म आदर्श संस्कृत कॉलेज,
अम्बाला छावनी, हरियाणा।

जब-जब जीवन या साहित्य के संदर्भ में स्त्री चिन्तन पर विचार किया गया है तो बार-बार यही लगा है कि स्त्री चिन्तन का स्वरूप मात्र स्त्री मानसिकता तक सीमित होकर रह गया है। स्त्री चिन्तन मानव को खुले मन से स्त्री की अस्मिता और अस्तित्व के बारे में सोचने के लिए बाध्य करता है। स्त्री केवल वस्तु नहीं, वह भी हाड़ मास की बनी एक मनुष्य है। उसकी अपनी भी कुछ आकांक्षाएं और समाज में अपेक्षाएँ हैं। स्त्री जहाँ परिवार तथा समाज का आधार है, वहीं पुरातन समय में समाज को विकास के रास्ते पे आगे ले जाने में मात   सत्ता का अहम् योगदान रहा है। भगवान सिंह के अनुसार, "भारतीय समाज पहले मात   सत्ताक था और इसको बहुत क्रूरता के साथ पित   सत्ताक बनाया गया। इसी के चलते पुरुष और स्त्री के बीच पुरुष की श्रेष्ठता कायम की गई।"[1]

यूँ तो सारी दुनिया में ही औरत-पुरुष के वर्चस्व की शिकार है, परन्तु भारतीय समाज में स्थिति और भी बुरी है। विवाह से पूर्व जहां उसे भाई एवं पिता का प्रभुत्व भोगना पड़ता है, वहीं विवाह के पश्चात् वह पति के अधीन हो जाती है। इस प्रकार उसे आजीवन पुरुष वर्चस्व झेलना पड़ता है। सदियों से भारतीय पुरुष धर्म का हवाला देकर औरत को दबाता आया है। आज भी स्थिति कोई ज्यादा अच्छी नहीं है। लेकिन आधुनिक समय में नारी अपने अधिकारों को लेकर जागरूक हुई है। वह गुलामी की इस पीड़ा से निकलना चाहती है।

भारतीय मनीषियों ने जहाँ स्त्री अस्तित्व को नमन किया वहीं महान समाज सुधारक राजा राम मोहन राय की लम्बी जदोजहद के बाद सती प्रथा को अमानवीय मान कर इसका विरोध किया जाने लगा। जिससे पहली बार स्त्री के अस्तित्व को

मनुष्य के रूप में स्वीकारा जाने लगा। भारतीय ... में राष्ट्र की मुक्ति के साथ स्त्री मुक्ति का प्रश्न भी ... नहीं कहा जा सकता कि स्वाधीनता आंदोलन सिर्फ पुरुषों का ... स्वाधीनता आंदोलन को किसी जाति, रंग, नस्ल आदि तक संकीर्ण नहीं किया जा सकता। इसलिए राष्ट्रीय स्वतंत्रता के साथ-साथ स्त्री स्वतंत्रता का प्रश्न भी प्रमुखता से उठाया गया।

आज स्त्री अपनी स्वतंत्रता को लेकर संघर्ष कर रही है। पुरुष के समान समाज में स्थान प्राप्त करना इसका उद्देश्य है, लेकिन पाश्चात्य स्त्री की सबसे बड़ी समस्या आर्थिक स्वतंत्रता की है। भारतीय स्त्री धर्म, समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था, परिवार आदि सभी क्षेत्रों में जकड़ी हुई है। "पुरुष ने स्त्री को एक भोग्या की वस्तु के रूप में रखा है। भले ही आज समाज स्त्री और पुरुष के समानता की बात करता है लेकिन आज भी वह सत्य से कोसों दूर है। आज भी स्त्री को पैर की जूती समझा जाता है। भले ही हम आधुनिकता तथा स्वतंत्रता का ढिंढोरा पीट लें परन्तु आज भी स्त्री उत्पीड़न तथा बलात्कार जैसी घटनाएँ होती रहती हैं। प्रतिदिन समाचार पत्रों में ऐसी घटनाओं को पढ़कर पुरुष की तो छोड़ो स्त्री की तरफ से कोई प्रतिक्रिया नहीं आती।"[2] अकेली औरत को देखकर पुरुष प्रधान समाज उसे नोचकर खा जाने को तैयार है। हर समय प्रत्येक स्थान पर वह असुरक्षा का भाव महसूस करती है। बाहर की बात तो छोड़ों उसका तो अपने ही घर में भी उत्पीड़न किया जाता रहा है। एक पत्नी के रूप में पति औरत को कामवासना को तृप्त करने वाली वस्तु ही मानता है। सिमोन ने कहा है, "औरत को औरत होना सिखाया जाता है। औरत बनी रहने के अनुकूल बनाया जाता है।"[3] कैसा भी समय रहा हो औरत के मन मस्तिष्क में एक बात बैठा दी जाती है कि वह केवल दासी है। पुरुष के अतिरिक्त उसका अपना कोई अस्तित्व नहीं है और वह इस बात को सत्य मान बैठी है।

स्त्री घर की चार दीवारी में काम करे और पुरुष उसका दोहन करता रहे। इस पीड़ा को एक स्त्री कब तक स्वीकार करेगी। उसे समाज को साथ लेकर यह अवगत कराना होगा कि वह वस्तु या मात्र कठपुतलियां नहीं है वे भी हाड़-मास की असली औरतें है, जिनकी अपनी इच्छाएं है तथा अपने अज्ञात और गोपन कोने हैं।

आज ही ऐसा नहीं हो रहा सदियों से मातृसत्ता के अंत के बाद पुरुषसत्ता के षड्यंत्र के तहत ऐसे वक्तव्य, टिप्पणियां, फतवे व आदेश दिए जाते रहे हैं, फिकरे कसे जाते रहे हैं, ताकि स्त्री में हीनता-बोध पैदा हो जाए कि वह खुद को अपराधी, पापी, अपवित्र, धरती पर बोझ व अवांछित वस्तु मानने लगे अपने पर तरस खाए और समर्पित हो जाए और अपने अधिकारों को भूल जाए। रेखा कस्तवार के अनुसार, "विश्व के अधिकांश भागों में स्थापित पूँजी व्यवस्था, पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने

Principal
Govt. Ripudaman College
NABHA

Title of the book	: **Vaishvik Sahitya Mein Stree Chetna**
Author name	:Dr. Talwinder Singh (Hindi Department)
Institute Name	: Govt Ripudaman College, Nabha
Publisher	sahatya sanchay publication, Delhi
ISBN number	: 978-93-88011-48-8
Year of publication	:2019
Chapter Published	: varatmaan samaye mein pursh varchasava ke virodh mein ugar hota stree sawar (Pg 197)

Principal
Govt. Ripudaman College
NABHA